ALL INDIA ORIENTAL CONFERENCE

46th SESSION to be held

AT

UNIVERSITY OF KASHMIR,

HAZRATBAL, SRINAGAR

On 1st, 2nd & 3rd October 2012

Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune

Research Paper Submitted By – **Jitendra Vyas** (Scholar),

Deptt. Of Sanskrit, Jai Narain Vyas University,

Jodhpur, (Rajasthan)

SECTION – VEDIC

Sectional President – Dr. Mahavir Agarwal,

Gurukula Kangri Vishwa-Vidyalaya, Haridwar

Subject of **ASTROLOGY**

Research Topic - **कुतुबमीनार (मेरूस्तम्भ) से कुतुबुद्दीन ऐबक का कोई सम्बन्ध नहीं : पंचसिद्धान्तिका के अनुसार ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य**

Contact – 99283-91270, E-mail id – Jitendravy@gmail.com

Address – "MATRA AASHIRWAD" J.N.V. COLONY,

NEW CHAND POLE ROAD, JODHPUR,

PIN – 342001, RAJ.

कुतुबमीनार (मेरूस्तम्भ) से कुतुबुद्दीन ऐबक का कोई सम्बन्ध नहीं : पंचसिद्धान्तिका के अनुसार ज्योतिषिय परिप्रेक्ष्य

आचार्य वराहमिहिर कई वेधयन्त्रों व वेद्य शालाओं के निर्माता थे। यहाँ यह बात प्रमाणित करने का प्रयास किया जा रहा है कि दिल्ली के मेहरौली में स्थित मेरूस्तम्भ वराहमिहिर की अद्‌भुत वेद्यशाला थी। इसके लिए हमें इसके निर्माण की आवश्यकता, निर्माणकाल की अवधि, इसकी बनावट, इसमें खण्डित भाग, इसका इतिहास, इसकी स्थापत्य कला के सभी पहलुओं व प्रमाणों का सूक्ष्मता से अध्ययन करना आवश्यक है।

इतिहास ग्रन्थ **'तबकात-ए-नासीरी'** का कहना है कुतुबुद्दीन कि छोटी अंगुली तोड़ दी गई थी और इसलिए उसे **ऐबक** कहा जाता था **ऐबक** यानि **'हाथ से पंगु'**। इतिहास ग्रन्थ **'ताजुल-मा-आसीर'** कहता है कि कुतुबुद्दीन ऐबक काफिरों का विध्वंसक है। अपनी तलवार के दमदार पानी से मूर्तिपूजकों के सारे संसार में जहन्नुम की आग में झोंक दिया। प्रतिमाओं और मूर्तियों के स्थान पर मस्जिद और मदरसों की नींव रखी और इस प्रकार के कारनामों से लोग नौशेराओं, रूस्तम और हातिमताई को भी भूल गए।[1]

कुतुबुद्दीन **ईस्वी सन् 1206 और 1210** तक हिन्दुस्तान में मुस्लिम अधिकृत भू-भाग का नाम मात्र सुल्तान रहा, इन चार सालों में उसका अधिकांश समय जगह-जगह भाग दौड़कर विद्रोह दबाने में व्यस्त रहा। इस बीच दो बार वह गजनी गया तथा छोटे-मोटे युद्ध में उलझा रहा तथा **नवम्बर 1210** में प्रारम्भिक दिनों में लाहौर के चौगान में घोड़े से गिरकर मर गया।[2]

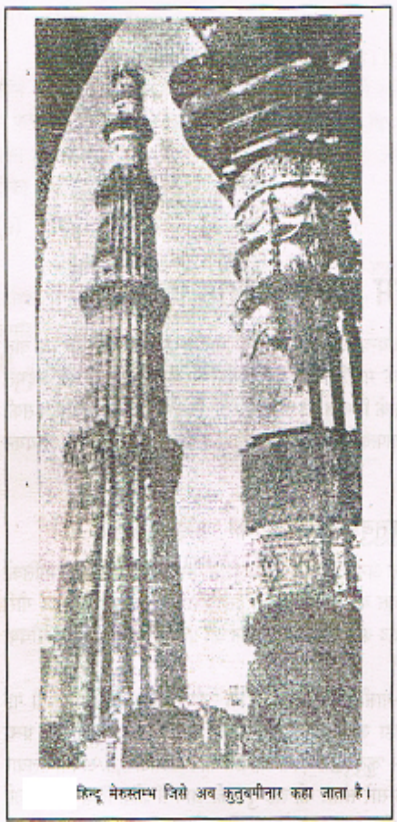
हिन्दू मेरूस्तम्भ जिसे अब कुतुबमीनार कहा जाता है।

दुनिया के किसी भी इतिहासकार ने उसे तथाकथित कुतुबमीनार बनाने का श्रेय नहीं दिया। प्रसिद्ध इतिहासकार व जम्मू कश्मीर के निवृत्तमान न्यायाधीश **श्री आर.बी. कंवर सेन** ने इस पर पूरी एक पुस्तक लिखकर यह सिद्ध किया कि **कुतुबुद्दीन ऐबक का इस मीनार से कोई वास्ता नहीं था।**

"Qutubuddin Aibak, the first Muslim rular of Delhi, was not the author or founder of Qutub Minar"[3] नाम के सादृश्य से यदि मान लिया जाये कि उसने यह मीनार बनाई तो प्रश्न उठते

हैं- **"उसने इसका निर्माण कब शुरू किया? इसमें कुल कितने व्यक्तियों ने काम किया? कारीगर कौन-कौन थे? इस पर कुल कितना खर्च आया? यह पूरी बनकर कब तैयार हुई? तथा कुतुबुद्दीन ऐबक की तथ्यावली तारीखों ने कहीं भी इस मीनार की चार दीवारी के भीतर ईसा पूर्व 280 साल पुराना "गरूड़-स्तम्भ" कहाँ से आया?"**[4]

'कुतुब' एक उर्दू शब्द है, जिसका अर्थ होता **ध्रुव** और कुतुबमीनार का सीधा-सादा अर्थ है **ध्रुवस्तम्भ या ध्रुवतारा** देखने की मीनार।[5] अरबी भाषा में भी **'कुतुबमीनार'** से अर्थ है- **'नक्षत्र निरीक्षण का स्तम्भ'**। चूंकि इस हिन्दु स्तम्भ का उपयोग नक्षत्रों के निरीक्षण के लिए होता था, इसीलिए बातचीत में इसे **'कुतुबमीनार'** कहा जाता था। जैसे आज भी दिशा सूचक चुम्बकीय यंत्र जो पानी के जहाज व पोत में लगे होते हैं उसे बोल-चाल की भाषा में **'कुतुबनामा' या 'कुतुबघड़ी'** कहते हैं।[6] मुस्लिम इतिहासकारों ने इस साधारण **अरबी शब्द** को **'कुतुबुद्दीन'** के साथ उलझा दिया और अर्धनिद्रा में **'कुतुबमीनार'** के निर्माण का श्रेय कुतुबुद्दीन को दे दिया।[7]

मेरूस्तम्भ का वास्तविक रूप वर्तमान न होकर बहुत विशालकाय था। **27 नक्षत्रों** के बोध के लिए इसके चारों ओर **27 नक्षत्र भवन** थे, जिसके कार्य पर आज के हिसाब से अरबों रूपया लगा था। यह स्तम्भ **दिल्ली की लाट, पृथ्वीराज का विजय स्तम्भ, सूर्य स्तम्भ, वेध स्तम्भ, विक्रम-स्तम्भ** आदि नामों से विख्यात था।[8] **सन् 1976** में दिल्ली स्थित तथाकथित कुतुबमीनार का उत्खनन किया गया जिनमें अनेक देव-मूर्तियां निकली, कुछ नींव में तो कुछ दीवारों से। उस समय पुरातत्व विभाग के मंत्री कांग्रेस के सदस्य थे और मुसलमान भी थे। एक और महत्वपूर्ण तथ्य का पता कुतुबमीनार के अभिलेखों को देखने पर चलता है कि अनेक हिन्दु-राजाओं एवं मुस्लिम सुल्तानों ने समय-समय पर इसकी मरम्मत कराई, परन्तु कहीं भी इस भवन का नाम कुतुबमीनार के रूप में अंकित नहीं है तथा इसके आदि निर्माता के रूप में प्रचारित बेचारे कुतुबुद्दीन का नाम भर भी कहीं पर अंकित नहीं है।[9] इन दोनों भूमिकाओं से उन्हें कुतुबमीनार में हिन्दु प्रमाण मिलना रूचिकर नहीं लगा अतः रात के अन्धेरे में, चोरी-छिपे, उत्खनन में जो हिन्दु-मूर्तियां प्राप्त हुई, उन उत्खनित मूर्तियों को चुपके से वहाँ से दूर ले जाकर गुम करवा दी गई।[10] प्रसिद्ध इतिहासकार **श्री पी. एन. ओक** ने **मार्च 1987 व 1988** में लगातार **अनेक पत्र लिखकर** भारत के तत्कालीन **पुरातत्व प्रमुख जागतपति जोशी और तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा** को इस हेरा-फेरी की शिकायत की, लेकिन वे दोनों आज तक चुप रहे।[11] उपरोक्त सभी प्रमाणों से यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि तथाकथित गुलाम वंशीय सुल्तान कुतुबुद्दीन का कुतुबमीनार से कोई सम्बन्ध नहीं था, न है। कुतुबुद्दीन जैसा विध्वंसक कभी इसका निर्माता नहीं हो सकता।[12]

गरूड़ स्तम्भ, खण्डित मीनार का मलबा, शिलालेखों एवं मूर्तियों का अकाट्य प्रमाण

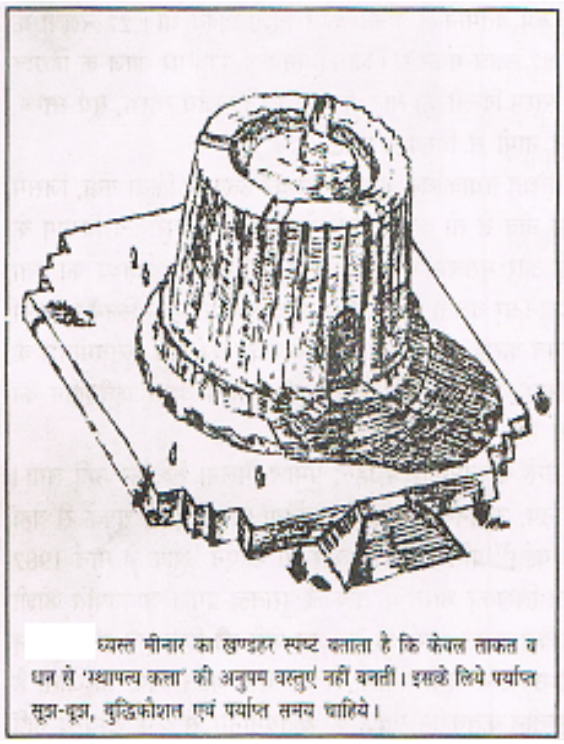

ध्वस्त मीनार का खण्डहर स्पष्ट बताता है कि केवल ताकत व धन से 'स्थापत्य कला' की अनुपम वस्तुएं नहीं बनती। इसके लिये पर्याप्त सूझ-बूझ, बुद्धिकौशल एवं पर्याप्त समय चाहिये।

निर्माण अवधि को ध्यान में रखते हुए यह बात निश्चित है कि प्रस्तुत मेरूस्तम्भ बहुत ही सूझबूझ, योजना के साथ-साथ धीमी गति से एवं पूर्ण मजबूती के साथ किसी हिन्दु सम्राट की देखरेख में बनाया गया हिन्दू स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है, जिसे उस सम्राट ने मुक्त हस्त से धन खर्च करके बड़ी तसल्ली एवं समय की कलावधि में बड़े प्रेम से बनाया।[13] तथाकथित कुतुबमीनार के परिसर में स्थापित इस **गरूड़ स्तम्भ** का लोहा इतना शुद्ध है, जिसे विश्व का सर्वाधिक **शुद्ध पिटवा लोहा** बताया है। इस स्तम्भ में **लोहा 99.720 प्रतिशत, कार्बन 0.080 प्रतिशत तथा फोस्फोरस 0.119 प्रतिशत** है। इस लोह स्तम्भ पर कभी काट नहीं आता, धूल नहीं जमती। आज हजारों वर्ष बीत जाने पर भी इस पर आंधी-तूफान, बरसात, गर्मी का कोई असर नहीं हुआ। समग्र संसार में यह **भारतीय धातु विज्ञान** का एक अनुपम उदाहरण है जिसकी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं है।

जमीन से 20 फुट ऊपर गरुड़मूर्ति के ठीक नीचे संस्कृत भाषा में लिखा गया एवं ब्राह्मीलिपि में उत्कीर्ण 'विष्णुध्वज' (लौह स्तम्भ का एक दुर्लभ (क्लोजअप)

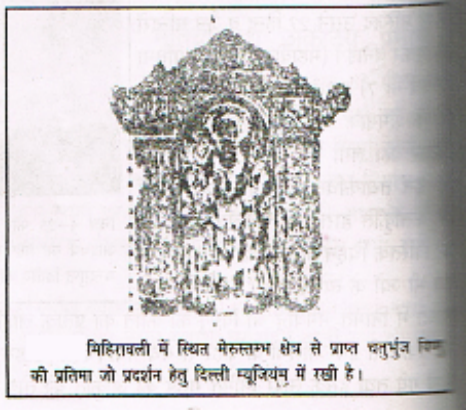

बिहिरावली में स्थित मेरुस्तम्भ क्षेत्र से प्राप्त चतुर्भुज विष्णु की प्रतिमा जो प्रदर्शन हेतु दिल्ली म्यूजियम् में रखी है।

वराहमिहिर की बृहत्संहिता के अध्याय 57, श्लोक 1-8 "व्रजलेपाध्याय" में **धातुओं के संघात व व्रजलेप** बनाने की ऐसी विधि बताई गयी है कि एक करोड़ वर्ष तक विकृत नहीं होती। इस स्तम्भ निर्माण में **वराहमिहिर** की

इसी विधि को प्रयोग में लाया गया है।

यथा–

अष्टौ सीसकभागाः कांसस्य द्वौ तु रीतिकाभागः

मयकधित्तो योगोअयं विज्ञेयो वज्रसंघातः ।।

आचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी के शोध अनुसार ब्राही-लिपि में उत्कीर्ण लेख का शुद्ध संस्कृत रूपान्तरण - शिलालेखों पर उत्कीर्ण श्लोक

यस्योद्वर्तयतः प्रतीपमुरसा शत्रून् समेत्यागतान्

वंगेष्वाहववर्तिनोअभिलिखिता शडगेन कीर्तिर्भुजे ।

तीर्त्वा सप्त मुखाग्नि येन समरे सिंधोर्जितार्वाह्लीका

यस्याद्याप्यधिवासते जलनिधिर्वीर्यानिलैर्दक्षिणः ।। 1

खिन्नस्येत्व विसृज्य गां नरपतेर्गामाश्रितस्येतराम्

मूर्त्याकर्म जितावनिं गतवतः कीर्त्या स्थितस्य क्षितौ ।

शान्तस्येव महावने हुतभुजो यस्य प्रतापो महान्

नाद्याप्युत्सृजति प्रणाशितरिपोर्यत्नस्य शेषः क्षितिम् ।। 2

प्राप्तेन स्वभुजार्जित च सुचिरं चैकाधिराज्यं क्षितौ

चंद्राहेन समग्रचन्द्रसदृशीं वक्त्रश्रियं बिभ्रता ।

तेनाय प्राणिधाय भूमिपतिना भा (धा) वेन विष्णो मूर्तिं

प्राशुंर्विष्णुपदे गिरौ भगवतो विष्णुर्ध्वजः स्थापितः ।। 3

मेरूस्तम्भ-हिन्दु स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण

सुप्रसिद्ध इतिहासकार, दार्शनिक एवं पुरातत्व वेत्ता डॉ. डी.एस. त्रिवेदी ने **'कुतुबमीनार अथवा विष्णुध्वज'** नामक एक शोधग्रन्थ लिखा। उसमें इस बात हेतु अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किये हैं कि कुतुबमीनार हिन्दु स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है जिसे **ईस्वी पूर्व 280 बी.सी.** में हिन्दू सम्राट **समुद्रगुप्त** ने

'विष्णुध्वज' के निर्माण की गाथा को स्पष्ट करता हुआ लौह-स्तम्भ पर उत्कीर्ण कालातीत यह शिलालेख भारतीय संस्कृति के गौरवशाली इतिहास का अमूल्य ऐतिहासिक दस्तावेज है।

बनाया। इस पुस्तक की भूमिका ने **इतिहास मर्मज्ञ सर रामास्वामी अय्यर** ने स्पष्ट किया कि समुद्रगुप्त ने अपने शासनकाल में कुल **तीन** वेधशालाएं- **प्रथम-मिहारावली (दिल्ली), द्वितीय-गया (बिहार) में, तृतीय-फिरोज खा (तुर्किस्तान)** में बनवाई। इस स्थान **(मिहारावली)** पर **ईसा की चौथी शताब्दी** में निर्मित **लोहस्तम्भ (विष्णुध्वज)** उनके पुत्र **चन्द्रगुप्त मौर्य** की कीर्ति में गाड़ा गया।[14]

उत्खनन प्रमाण

कुतुबमीनार की खुदाई में संस्कृत में लिखे शिलालेख एवं लाल पत्थरों पर कामधेनु एवं वराह के राजचिह्न पाये गये। गाय और वराह दोनों ऐसे प्राणी हैं जिनके प्रति इस्लाम को बड़ी शत्रुता एवं घृणा है।[15] भारत में या भारत के बाहर संसार की **किसी मस्जिद में गाय, स्वस्तिक, घंटा, विष्णु, गरूड़, पेड़-पौधों व पत्तियों के तोरण व अलंकारिता के चिह्न** नहीं मिलेंगें क्योंकि इस्लाम धर्म जहाँ पैदा हुआ वहाँ न पेड़-पौधे थे, न सुन्दर पशु-पक्षी, ना ही पत्तियाँ अतः इनको चित्रित करने की वहाँ स्थापत्य परम्परा न थी। धीरे-धीरे परम्परा रूढ़िवाद बन गई तथा किसी भी जीवन्त प्राणी की आकृति न बनाने का नियम मुस्लिम स्थापत्य कला का अनिवार्य अंग बन गया। **भारत सरकार के पुरातत्व** कि विभाग ने **'दिल्ली'** पर एक पुस्तक प्रकाशित की जिसके **पृष्ठ संख्या 55** पर बताया जनश्रुति के अनुसार कुतुबमीनार दिल्ली के अन्तिम शासक सम्राट श्री पृथ्वीराज चौहान ने बनाई जहाँ पर जाकर उसकी पुत्री यमुना नदी को उसके उद्गमस्थल के साथ सम्पूर्ण रूप में देखती और नित्य प्रति यमुना नदी की पूजा करती थी। यद्यपि इस मीनार की बाहरी दिखावट इस्लामिक प्रतीत होती है तथापि इसमें हिन्दू स्थापत्य शैली भी बहुतता से मुखरित होती है। इस बारे में, इसमें पाये जाने वाले देवनागरी के शिलालेखों एवं मन्दिरों के मूर्तिमन्त पत्थर स्वयं अपने आप में इस वस्तु-स्थिति के गवाह हैं।[16]

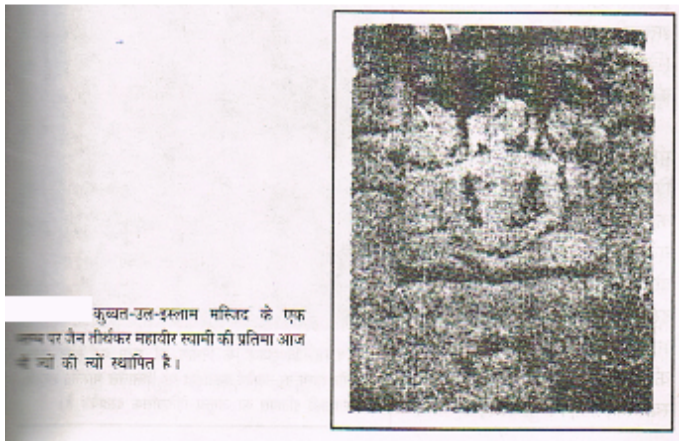

कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के एक खम्भे पर जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी की प्रतिमा आज भी ज्यों की त्यों स्थापित है।

भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का यह उद्धरण पूर्णतया चौकानें वाला है एवं अपने आप में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह इस **शोधपत्र** को आगे बढ़ाने में **दीप स्तम्भ** का कार्य कर रहा है। कुतुबमीनार की **तीसरी मंजिल** पर एक **अभिलेख** मिलता है-

"पिरथी निरपः स्तम्भ, मलिकदीन कीरतिस्तम्भ सुलत्राण उल्लाउद्दीन की जय स्तम्भ।"

यहाँ **'पिरथी निरपः'** स्तम्भ से अभिप्राय केवल **महाराजा पृथ्वीराज चौहान** से है जिनका **शासन काल ईस्वी सन् 1175 से 1193 तक** का रहा। यह अभिलेख परवर्ती सभी मुस्लिम शासकों के निर्माण सम्बन्धी सभी दावों को झूठा सिद्ध करता है।[17] सुप्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता व न्यायाधीश श्री कंवर सेन के मतानुसार हिन्दु स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण यह **'जय स्तम्भ' चौहान वंशीय सम्राट श्री विशालदेव विग्रहराज** ने अपने दिल्ली विजय के अवसर पर बनवाया।[18] कुतुबमीनार की **पांचवीं मंजिल के प्रवेश द्वार पर एक अभिलेख** मिलता है। सभी मुस्लिम शासकों ने झूठे दावों का खण्डन करता हुआ इस भवन के सही नाम को भी बताता है, इसलिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह अभिलेख आज भी स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता है।

मेरु पृष्ठीय श्री यन्त्र की कमल-कर्णिकाओं में निर्मित तथाकथित 'मेरुस्तम्भ' अथवा कुतुब मीनार।

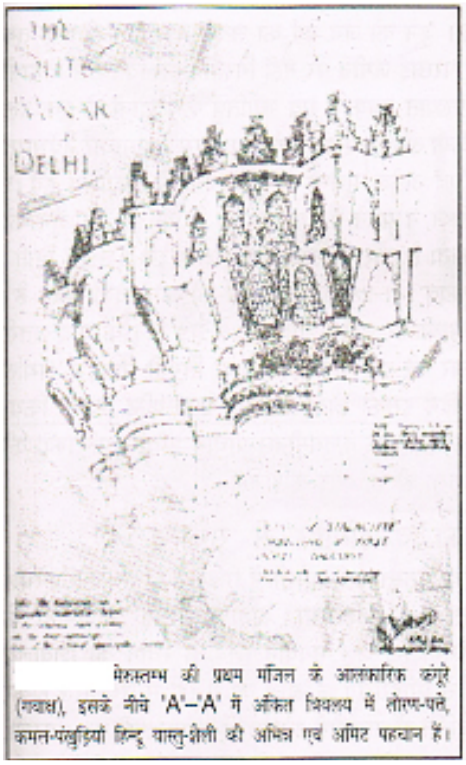

मेरुस्तम्भ की प्रथम मंजिल के आलंकारिक कंगूरे (छज्जे), इसके नीचे 'A'–'A' में अंकित शिखर में तोरण-पत्ते, कमल-पंखुड़ियां हिन्दू वास्तु-शैली की अमिट एवं अमिट पहचान हैं।

"ओं स्वस्ति श्री सुरित्राण फेरोजशाहि विजयराते संवत् 1425 वरिष्ठ फाल्गुण सुदि 5 शुक्रदिने मुकरो जीर्णोद्धार कृतं श्री विश्वकर्माप्रासादे सुत्रधारी चाहड़देवपाल सुतदोहित्र सुत्रपालः प्रतिष्ठा निष्पातित उदैगज 92"

इस अभिलेख में कुतुबमीनार को **'विश्वकर्मा प्रासाद'** कहा गया है। इससे एक बात तो स्पष्ट हो गई कि **ईसा की चौदहवीं शताब्दी** के अन्त तक **फिरोजशाह तुगलक** के जमाने तक इस विशाल भवन को मुस्लिम कृति नहीं माना जाता था बल्कि एक हिन्दु भवन समझा जाता था।[19] **चाहड़देवपाल** के **पुत्र के दोहित्र** ने **ईस्वी सन् 14 फरवरी, 1370 शुक्रवार को इस भवन का जीर्णोद्धार व प्रतिष्ठा कराई।**

तथाकथित कुतुबमीनार के मूल में हिन्दु-वास्तुकला

वास्तु-कला की दृष्टि से एक पक्षी बनकर कुतुबमीनार की अन्तिम मंजिल पर लोहे के स्तम्भ पर चढ़कर नीचे देखा जाये तो कुतुबमीनार की बनावट स्पष्ट रूप से **'मेरू-पृष्ठीय/श्रीयंत्र'** के समकक्ष कमल-कर्णिकाओं की तरह सुशोभित है।[20] सबसे नीचे **16 गज गहरी** तथा **16 गज चौड़े** घेरे वाली कमल कर्णिका है, फिर एक कमल में से दूसरा, तीसरा, चौथा व पांचवाँ कमलदल निकलता हुआ दिखलाई देता है। यह मात्र हिन्दु वास्तु-कला का अनुपम उदाहरण है। मीनार की **12 दिशाओं में 12 राशि वलय एवं सात खण्ड सात स्वर्ग** की इंगित करते हैं[21] कुछ विद्वानों ने **श्रीमद्भागवत महापुराण**[22] के अनुसार इस कुतुबमीनार का सादृश्य हुबहू मेरूपर्वत के मॉडल से स्थापित किया है तथा श्लोक में वर्णित **योजन** को **'गज'** के नाप में बदला है।

अरबी भाषा में ध्रुव को कुतुब और स्तम्भ को मीनार कहते हैं। संस्कृत भाषा में **'ध्रुव'** को **'मेरू'** भी कहते हैं **अतः कुतुबमीनार 'मेरूस्तम्भ' का ही अरबी अनुवाद है।**[23] इसको ऐबक की मुस्लिम कृति सिद्ध करने के लिए परवर्ती कट्टरपंथी मुसलमानों ने मेरूस्तम्भ के चारों तरफ कुरान की आयतें एवं अन्य मुस्लिम सुल्तानों की झूठी प्रशंसा खुदवा दी, जबकि **मुस्लिम इतिहासकार सर सैय्यद** ने ईमानदारी के साथ **'असर-उस-संद्दी'** में लिखा है कि यह मीनार मुस्लिम कृति नहीं, अपितु यह भवन **राजपूत काल में निर्मित एक हिन्दू भवन है।**[24] हिन्दु वास्तुकला के अनुसार प्रत्येक देव मन्दिर का प्रवेश द्वार पूर्वाभिमुख होता है, जिस तरफ सूर्य उदय होता है उसी तरफ ही मूर्ति का मुख या साधक का मुंह होता है। यह पूजन की अनिवार्य शर्त है। मुस्लिम स्थापत्य कला के अनुसार **मस्जिद का प्रवेश द्वार पश्चिमाभिमुख** होता है तथा एक मुस्लिम, काबा **(पश्चिम दिशा की ओर)** की तरफ मुंह करके ही नमाज पढ़ेगा। यह इस्लामिक वास्तुकला की अनिवार्य शर्त है, परन्तु कुतुबमीनार तो पश्चिमाभिमुख नहीं है।[24]

वेधशाला और छाया प्रमाण

अब तक यह स्पष्ट है कि यह कोई इस्लामी इमारत नहीं है तथा न ही कोई उत्कृष्ट मन्दिर के लक्षण भी इस पर घटित होते हैं क्योंकि इसका प्रवेश द्वार उत्तर की ओर है। **रात्रि में दिशा-बोध के लिए, सप्त ऋषियों को पकड़ने के लिए, ग्रह व उचित लग्नों को ठीक से समझने के लिए, हमें सबसे पहले ध्रुव तारे का सहारा** लेना पड़ता है ऐसी अवस्था में **ज्योतिष नियमों के अनुसार सभी वेधशालाओं के प्रवेश द्वार व झरोखे उत्तराभिमुख** होते हैं। **यह मीनार भी उत्तराभिमुख है अतः यह एक वेधशाला है।** ज्योतिष सिद्धान्तों के अनुसार प्राचीन **जन्तर-मन्तर एवं दिल्ली के कर्म-वलय यन्त्रों** की तरह इस मीनार का झुकाव भी **5^0 दक्षिण की ओर** रहा गया है इसका मुख्य कारण यह है कि **21 जून** को जब वर्ष का सबसे बड़ा दिन होता

है तब **दोपहर 12.00 बजे** इस विशाल मीनार की परछाई जमीन पर नहीं गिरती। इस विषय में विद्वानों ने खोज की तथा **21 जून 1970** को प्रख्यात पत्रकारों एवं ज्योतिष के विद्वानों के एक दल ने व्यावहारिक तौर पर इसका परीक्षण किया और तथ्य को सत्य पाया जिसके समाचार नवभारत टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान, नवजीवन एवं अनेक मूर्धन्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए।[25] **21 जून** को पृथ्वी पर इसकी छाया न पड़ने का कारण यह है कि इस **21 जून को सूर्य मध्यरेखा से 23-30^0 डिग्री उत्तर होता है मेरूस्तम्भ का अक्षांश 28-31-38 डिग्री। मध्यरेखा के निर्माणकाल में इसका झुकाव 5-1-28 डिग्री दक्षिण की ओर** दिया गया है। जिसके कारण इसकी छाया उस दिन पृथ्वी पर नहीं पड़ती। सबसे बड़े दिन के बाद **उत्तरी गोलार्द्ध के सबसे छोटे दिन 23 दिसम्बर** को इस मीनार की छाया तिगुनी मात्रा में अर्थात् सबसे लम्बी दिखलाई पड़ती है, इस दिन इसकी **छाया का नाप 280 फीट रिकार्ड** किया गया। इस अकाट्य प्रमाण से ही स्पष्ट है कि कुतुबमीनार प्राचीन **'पंचसिद्धान्तिका'** की शैली पर निर्मित वराहमिहिर की वेधशाला ही है और कुछ नहीं।[26]

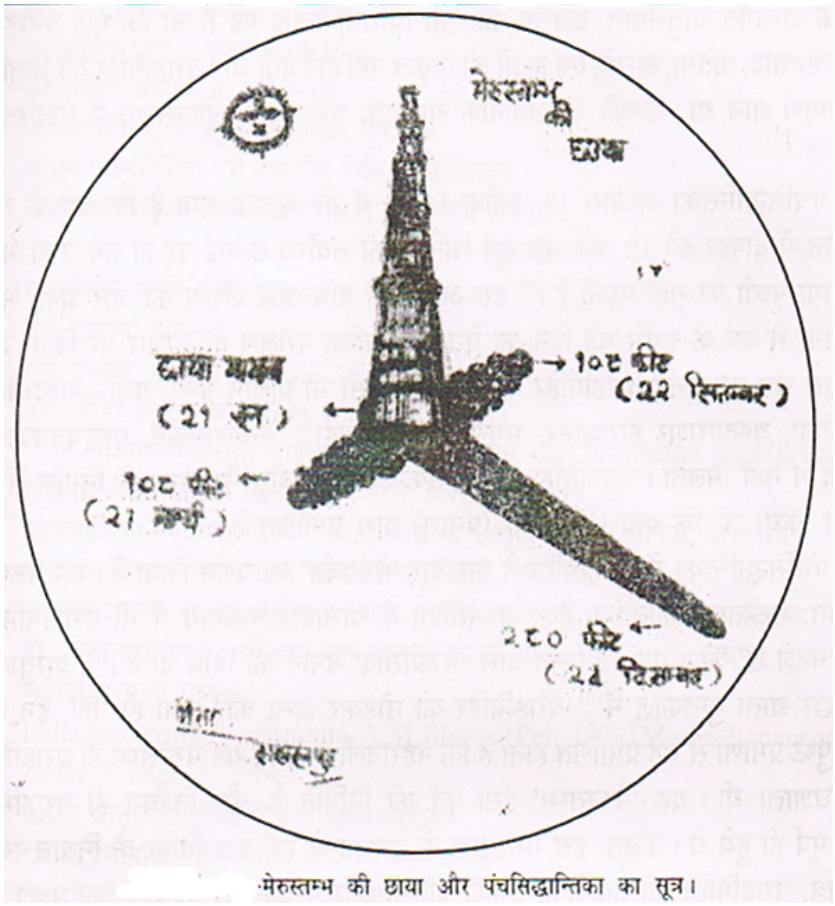

मेरुस्तम्भ की छाया और पंचसिद्धान्तिका का सूत्र।

यथा-

मिथुनान्ते च कुवृत्तादशचतुर्विंशति विहायोच्चैः ।
भ्रमति हि रविरमराणां समोपरिष्टा तदाअवन्त्याम्।।
नष्टच्छायाअप्येवं, छायोदकतत्प्रभृत्युदक्स्थानाम् ।
तद्दक्षिणदेशानां मध्याह्ने दक्षिणा छाया ।।

मेरूस्तम्भ (तथाकथित कुतुबमीनार) का वराहमिहिर से सम्बन्ध

मेरूस्तम्भ मिहरौली में स्थित है। मिहरौली अपभ्रंश शब्द है। शुद्ध शब्द है **'मिहिर+आलय = मिहिरालय'**। अर्थात् आचार्य वराहमिहिर के रहने के स्थान को **'मिहिरालय'** कहा गया है । जैसे भगवान् शिव के स्थान को शिवालय कहा जाता है। उच्चारण की असुविधा से **मिहिरालय के अन्त का य 'ई' में उच्चारित** होकर अपभ्रंश रूप से मिहरौली के रूप में परिवर्तित हो गया है जैसे अंगरक्षकी व पगरक्षकी का क्रमशः अंगरखी व पगरखी हो गया। **डॉ. डी.एस. त्रिवेदी** की व्याख्या इसमें कुछ भिन्न है वे शुद्ध शब्द **'मिहिरावली'** मानते हैं। **मिहिर का अर्थ है- सूर्य, अवली का अर्थ है- कतार-पंक्ति**। जैसे दीप-अवली =दीपावली। ठीक उसी प्रकार से मिहिरावली का अर्थ होता है सूर्यादि नक्षत्रों को देखने वाली वेधशाला और यहाँ यही अर्थ अभिप्रेत किया गया है।[27]

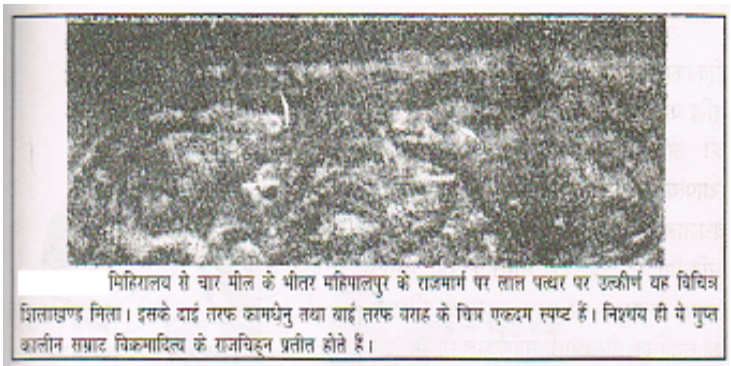

मिहिरालय से चार मील के भीतर महिपालपुर के राजमार्ग पर लाल पत्थर पर उत्कीर्ण यह विचित्र शिलाखण्ड मिला। इसके दाईं तरफ कामधेनु तथा बाईं तरफ वराह के चित्र एकदम स्पष्ट हैं। निश्चय ही ये गुप्त कालीन सम्राट विक्रमादित्य के राजचिह्न प्रतीत होते हैं।

ध्यान से देखें। खण्डित पत्थर पर पड़ी हुई हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ (भाग 1)

और देखें। इसी खण्डित पत्थर के पीछे खोदी गई आयतें एवं नक्शा (भाग 2) दोनों चित्रों से एकदम स्पष्ट है कि आक्रमणकारी मूर्तिभंजकों ने भग्न मन्दिर के अवशिष्ट पत्थरों पर कुरान की आयतें खुदवाकर उन्हीं पत्थरों को मेरुस्तम्भ के चारों ओर जड़वा दिया।

यदि ओर गहराई में उतरा जाये तो **टीकाकार भरत** के अनुसार तो सूर्य जैसी तेजस्वी बुद्धि वाले व्यक्ति को मिहिर कहते हैं।[28] विश्व की अद्वितीय, अप्रतिम व अद्भुत हिन्दु स्थापत्य कला से ओतप्रोत इस गौरवशाली वेधशाला के निर्माण के पीछे भी विश्व का अद्वितीय एवं विलक्षण मस्तिष्क रहा होगा।

मेरे गुरूदेव **श्री डॉ. भोजराज द्विवेदी** ने तथा उनके समकक्ष विद्वान साथियों **पं.जगन्नाथ भसीन, पं. जगन्नाथ भारद्वाज, पं.सत्यवीर शास्त्री** और **महान वीर थुल्ली** के साथ कुतुबमीनार का निरीक्षण करने **21 जून, 1984** को गये थे। उन लोगों को मीनार के चारों ओर का विशाल

प्रांगण सूखे तालाब सा परिलक्षित हुआ। सम्भवतः एक बहुत बड़े तालाब के बीचो-बीच में यह स्तम्भ बनाया गया था ताकि रात्रि में तालाब के निर्मल जल में ग्रह-नक्षत्रों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखलाई दे सके एवं दिन में सूर्य के प्रतिबिम्ब के आधार पर नेत्रों पर बिना जोर डाले सूर्य का वेध किया जा सके। निश्चय ही यह विलक्षण योजना मिहिराचार्य के अन्यत्र किसी की नहीं हो सकती है। **पं.मायाराम** ने स्पष्ट रूप से प्रभावित किया है कि यह वेधशाला वराहमिहिर की थी।[29]

लग्न के उदयास्त को देखने के लिए, सूर्य-चन्द्रादि ग्रहों के सही उदय-अस्त कालीन समय की गणना के लिए, ग्रहों की युति, प्रति-युति, श्रंगोन्नति व पारस्परिक युद्ध को देखने के लिए, उस शहर के सबसे उंचे पठारी भाग पर जाकर उसे देखना होता है। **106 फीट उंची इस कुतुबमीनार की उंचाई** का मुख्य कारण यही है, यदि इसे आमोद-प्रमोद, कौतूहल या विलासिता के लिए बनाया होता तो इसमें उस प्रकार की सुविधा व आनन्द-प्रमोद के लिए ठहरने का एकाध प्रकोष्ठ अवश्य होगा, परन्तु ऐसा नहीं है।[30]

अतः यह 'मेरूस्तम्भ' (तथाकथित कुतुबमीनार) ही वराहमिहिर का विश्वविद्यालय व वेधशाला है। बृहत्संहिता 'व्रजलेपाध्याय' 57, श्लोक 1-8 के अन्तर्गत धातुसंघात, व्रजलेप की विधियाँ बताई गई हैं जो कि एक करोड़ वर्ष तक देवप्रासाद, प्रतिमा, खम्भों एवं कुओं को विकृत नहीं होने देती थी सम्भवतः अतः यही तकनीक **(गरूड़-ध्वज) लोहस्तम्भ** में मुखरित हुई है।

पंचद्धिान्तिका, अध्याय 13, श्लोक 10-11 में यह बनाया गया है कि वर्ष के **6 बजे बड़े दिन में दोपहर की 12 बजे सूर्य क्षितिज की सर्वोच्च उंचाई** पर हो तब उच्च भवनों की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ती है।[31]

यथा-

मिथुनान्ते च कुवृत्तादशचतुर्विंशति विहायोच्यैः ।
भ्रमति हि रविरमराणां समोपरिष्टा तदाअवन्त्याम्।।
नष्टच्छायाअप्येवं, छायोदकतत्प्रभृत्युदक्स्थानाम् ।
तद्दक्षिणदेशानां मध्याह्ने दक्षिणा छाया ।।

इस आधार से **पांच अंश दक्षिण** की ओर झुके, भवनों की छाया से वर्ष के सबसे बड़े दिन का वेध व्यावहारिक परीक्षण के आधार पर किया जाता था। इस सूत्र का वर्णन **वराहमिहिर** को छोड़कर किसी भी प्राचीन ग्रन्थ **यथा- नारदसंहिता, गर्गसंहिता, बृहत्पाराशर हौराशास्त्र, भृगुसंहिता, आर्यभट्टीय, सत्यजातकम्, बृहद्यवनजातक** इत्यादि में नहीं मिलता। वराहमिहिर ने इस तकनीक का प्रयोग मेरूस्तम्भ के निर्माण में पूर्ण रूप से किया जो कि प्रत्यक्ष परीक्षणों द्वारा प्रमाणित है।

पंचसिद्धान्तिका में वराहमिहिर ने बार-बार **'मेरूपवर्तत'** का वर्णन किया है। यह मेरूपर्वत सम्भवतः मेरूस्तम्भ ही हो सकता है।[32]

यथा -

मेरोः सममुपरि वियत्यक्षो व्योमस्थितो ध्रुवोअधोअन्यः ।।

- पद्भ्रमति मेरूमध्या ।।

बृहत्संहिता में प्रासादलक्षणाध्याय में भी वराहमिहिर के सबसे पहले **छः कोण एवं 12 वलय** वाले **'मेरूप्रासाद'** बनाने की विधि दी है।[33]

यथा -

तत्रषडश्रिर्मेरूर्द्वादशभौमो विचित्रकुहरच्श्र ।

द्वारैर्युतच्श्रतुर्भिर्द्वात्रिंशद्धस्तविस्तीर्णः ।।

वास्तु शास्त्र में प्रखर ज्ञाता **गुप्तकाल**[34] में वराहमिहिर के अन्यत्र कोई नहीं हुआ, यह **'मेरूस्तम्भ' ईसा पूर्व** ही निर्मित है और निश्चय ही वराहमिहिर इसके पूर्व ही हुए थे। फलतः इस मेरूस्तम्भ के माध्यम से हमें वराहमिहिर के निवास-स्थान कार्यक्षेत्र, वराहमिहिर की तकनीक, उसकी प्रतिभा और वराहमिहिर के काल का प्रबल पुष्ट संकेत मिलता है। इन सभी प्रबल पुष्ट प्रमाणों से **यह प्रमाणित होता है कि मेहरावली में स्थित यह मेरूस्तम्भ ही वराहमिहिर की वेधशाला थी।**

REFERENCES

1. भारत में मुस्लिम सुल्तान/ पी.एन.ओक/ प्रकाशन 1993/ भारतीय साहित्य सदन/नई दिल्ली / अध्याय 5/ पृष्ठ सं. 127, ताजुलू-मा-इलियट एवं डाउसन/ग्रन्थ 2/ पृष्ठ सं. 229
2. भारत में मुस्लिम सुल्तान/ पृष्ठ सं. 138
3. कुतुबमीनार और दिल्ली-की-लाट/ कंवर सेन/ प्रकाशन 1951/ आत्माराम एण्ड संस/ दिल्ली-6 / पृष्ठ सं. 2
4. World directory of Astrology/ प्रकाशन 1986/ प्रकाशक अज्ञात दर्शन, गोल बिल्डिग के पीछे, फर्स्ट बी रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर/ पृष्ठ सं. 9
5. वही दृष्टव्य / पृष्ठ सं. 8
6. हिन्दी-अंग्रेजी भार्गव डिक्सनेरी/ पृष्ठ सं. 158
7. भारत में मुस्लिम सुल्तान/ पृष्ठ सं. 139
8. भारतीय खगोल विज्ञान/ पं.जगन्नाथ भारद्वाज/ प्रकाशन 1978/ प्रकाशक मोहन ब्रदर्स 1227/ बंगाली मौहल्ला, अम्बाला छावनी/ पृष्ठ सं. 108
9. वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास/ पी.एन.ओक/ प्रकाशन 1989/ भारतीय साहित्य सदन 39/90, कनॉट सर्कस/ नई दिल्ली/ पृष्ठ सं. 172
10. वही दृष्टव्य / पृष्ठ सं. 175
11. विष्णुध्वज और कुतुबमीनार / डॉ. डी.एस. त्रिवेदी/ पृष्ठ सं. 241
12. कुतुबमीनार और दिल्ली की लाट/ कंवर सेन/ पृष्ठ सं. 3
13. वही दृष्टव्य / पृष्ठ सं. 3
14. विष्णुध्वज और कुतुबमीनार- डॉ. डी.एस. त्रिवेदी / पृष्ठ सं. 1
15. वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (खण्ड 4) / पृष्ठ सं. 175
16. Delhi & its Neighbourhood, Page no.55
17. वराहमिहिर स्मृति ग्रन्थ / पृष्ठ सं. 128
18. कुतुबमीनार और दिल्ली की लाट / कंवर सेन/ पृष्ठ सं. 5
19. वराहमिहिर स्मृति ग्रन्थ / पृष्ठ सं. 129
20. World directory of Astrology, Page No. 11
21. विष्णुध्वज और कुतुबमीनार / पृष्ठ सं. 247

22. श्रीमद्भागवत महापुराण/ स्कन्ध 5/ अध्याय 16/ श्लोक सं. 7/ प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर/ पृष्ठ सं. 608

23. भारतीय खगोल विज्ञान/ पृष्ठ सं. 107

24. वराहमिहिर स्मृति ग्रन्थ/ पृष्ठ सं. 129

25. आचार्य वराहमिहिर का ज्योतिष में योगदान/ डॉ. भोजराज द्विवेदी/ प्रकाशक रंजन पब्लिकेशन, नई दिल्ली / पृष्ठ सं. 106

26. पंचसिद्धान्तिका/ वराहमिहिर / अध्याय 13/ श्लोक सं. 10-11/ पृष्ठ सं. 33

27. विष्णुध्वज और कुतुबमीनार/ डॉ. डी.एस. त्रिवेदी/ पृष्ठ सं. 154

28. शब्दकल्पद्रुम/ खण्ड 2 / पृष्ठ सं. 550

29. वराहमिहिर स्मृति ग्रन्थ/ पृष्ठ सं. 550

30. World directory of Astrology, Page No. 11

31. पंचसिद्धान्तिका/ वराहमिहिर/ अध्याय 13/ श्लोक सं. 11/ पृष्ठ सं. 33

32. पंचसिद्धान्तिका/ वराहमिहिर/ अध्याय 13/ श्लोक सं. 5/ पृष्ठ सं. 32

33. बृहत्संहिता/ वराहमिहिर/ अध्याय 56 प्रासादलक्षणाध्याय/ श्लोक सं. 20 / पृष्ठ सं. 301

34. New Illustrated columbia Enclyclopedia, Volume-Vi, Page No. 320